ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 09 कुल पृष्ठ-8 9 से 15 जून, 2022 | दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 ज्ये. शु.-10

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, भरतपुर राजस्थान के तत्वावधान में विशाल आर्य महासम्मेलन का हुआ भव्य आयोजन

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्मशती वर्ष 2024 में विविध आकर्षक एवं महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रमों के साथ मनाई जायेगी – स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज की तेजस्विता को बनाये रखना वर्तमान की प्रमुख आवश्यकता है – आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय

वैदिक संस्कृति की रक्षा त्याग एवं बलिदान से सम्भव है – अंजलि आर्या

शुद्धि आन्दोलन के जन्मदाता स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रेरणा लें – हरीशचन्द्र शास्त्री

आर्य समाज समाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखेगा – सत्यदेव आर्य

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, भरतपुर, राजस्थान के तत्वावधान में दिनांक 2, 3 व 4 जून, 2022 को विशाल आर्य महासम्मेलन आयोजित हुआ। इस महासम्मेलन में विविध विषयों पर वैदिक विद्वानों, आर्य नेताओं एवं भजनोपदेशकों ने अपने व्याख्यानों के द्वारा सम्मेलन में उमड़ी भीड़ को सम्बोधित किया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा उनके प्रभावशाली व्याख्यानों ने जनता को अत्यन्त प्रभावित किया। उन्होंने समापन समारोह में बोलते हुए आर्यों का आह्वान किया कि वे आर्य समाज के तेजस्वी एवं प्रखर स्वरूप को बनाये रखने के लिए कृत संकल्प हों। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में बहुत सारे लोग आर्य समाज के कार्यक्रमों में सिद्धान्तहीन बातें करते हैं और सिद्धान्त विरुद्ध बोलने वाले वक्ताओं को आमंत्रित करते हैं। आर्य समाज के उत्सवों में वेद विरुद्ध मान्यताओं के खण्डन करने पर ऐतराज जताते हैं, इससे आर्य समाज के तेजस्वी स्वरूप बिगड़ता है। आचार्य जी ने ऐसी गतिविधियों को पूर्णतया रोकने तथा वैदिक सिद्धान्तों के मण्डन के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि स्वार्थी तथा पदलोलुप लोग आर्य समाज की प्रतिष्ठा को सुरक्षित नहीं रख सकते। इसके लिए त्यागी, तपस्वी एवं सिद्धान्तनिष्ठ नेतृत्व की आवश्यकता है।

अपने व्याख्यान में स्वामी आर्यवेश जी ने वर्ष 2024 में महर्षि दयानन्द सरस्वती की द्विशताब्दी के कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की और उन्होंने कहा कि वर्ष 2024 में महर्षि दयानन्द जी के नाम से देश के कोने–कोने में महर्षि दयानन्द जी को समर्पित ऐसे स्मारक बनायें जाने चाहिए जिससे लोगों के दिल में महर्षि दयानन्द जी के सम्बन्ध में जानने की जिज्ञासा पैदा हो। स्वामी जी ने इसके लिए केन्द्र सरकार तथा प्रान्तीय सरकारों से अपील की कि वे देशभर में ऐसे स्मारक राजकीय कोष के माध्यम से बनायें और उन्हें राष्ट्र को समर्पित करें। स्वामी आर्यवेश जी ने वर्ष 2025 में आर्य समाज की 15वीं जयन्ती, वर्ष 2026 में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान शताब्दी और वर्ष 2027 में देश के महान क्रांतिकारी अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल की बलिदान शताब्दी मनाई जायेंगी। इनके लिए शीघ्र ही आर्य समाज की विस्तृत योजना घोषित की जायेगी। आर्य समाज की 150वीं जयन्ती अर्थात् वर्ष 2025 सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण, वैदिक समाजवाद तथा वैदिक अध्यात्मवाद को समर्पित होगा और वर्ष भर इन मुद्दों पर प्रचण्ड अभियान चलाया जायेगा। वर्ष 2026 स्वामी श्रद्धालिदान जी की बलिदान शताब्दी को समर्पित होगा और वर्ष भर नये गुरुकुलों की स्थापना, पुराने गुरुकुलों की देख–रेख तथा शुद्धि के कार्य को समर्पित रहेगा। वर्ष 2027 अमर शहीद राम प्रसाद बिल्मिल के बलिदान की स्मृति में लाखों युवाओं को आर्य समाज से जोड़ा जायेगा और पूरे देश में राष्ट्रवाद की भावना को जन–जन तक पहुँचाने के लिए कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। स्वामी आर्यवेश जी ने भरतपुर की जिला आर्य उपप्रतिनिधि के समस्त पदाधिकारियों को इस सफल आयोजन के लिए हार्दिक बधाई एवं साधुवाद दिया। उन्होंने कहा कि इतनी प्रभावशाली उपस्थिति कभी–कभी ही आर्य समाज के कार्यक्रमों में देखने को मिलती है।

बहन अंजलि आर्या ने महाराणा प्रताप के इतिहास के उद्धरण सुनाते हुए ओजस्वी गीतों एवं व्याख्यानों से जनसमूह को पूरे जोश में भर दिया और उन्होंने कहा कि किसी भी राष्ट्र एवं संस्कृति की रक्षा त्याग एवं बलिदान से ही हुआ करती है। भारत बलिदानियों का देश है। अतः हमें अपने शहीदों से प्रेरणा लेनी चाहिए और राष्ट्र की उन्नति के लिए संकल्पित होना चाहिए।

समापन समारोह की अध्यक्षता कर रहे श्री हरीशचन्द्र शास्त्री ने अपने उद्बोधन में शुद्धि आन्दोलन के जनक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी को स्मरण करते हुए कहा कि वर्तमान में हम सभी को मिलकर शुद्धि आन्दोलन को चलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि वे शुद्धि आन्दोलन का इतिहास लिख रहे हैं, आप लोगों को भी यदि कोई सामग्री मिले तो मुझे भेज सकते हैं।

जिला सभा के यशस्वी प्रधान श्री सत्यदेव आर्य ने आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए घोषणा की कि वे आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए सदैव कटिबद्ध रहेंगे। विदित हो कि यह जिला आर्य महासम्मेलन निरन्तर तीन दिन से चल रहा था। एक दिन विशाल शोभा यात्रा को समर्पित रहा और शेष दिनों में आगन्तुक विद्वानों, संन्यासियों एवं उपदेशकों के ओजस्वी व्याख्यान एवं भजनों का कार्यक्रम चलता रहा। कार्यक्रम में क्षेत्र की जनता ने जोश–खरोश के साथ भारी संख्या में सम्मिलित होकर अपनी श्रद्धा का परिचय दिया।

इस अवसर पर जिला सभा के प्रधान श्री सत्यदेव आर्य के अतिरिक्त पूर्व प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य (गुनसारा), श्री एम.डी. शास्त्री, आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नरदेव आर्य, श्री सत्यवीर वर्मा आदि ने कार्यक्रम का कुशलता के साथ संचालन किया। आर्य वीरदल के कार्यकर्ताओं ने भोजन आदि की व्यवस्था में अपना सक्रिय योगदान दिया। कार्यक्रम पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

वेदों में प्रतिपादित नारी का आदर्श स्वरूप

– डॉ0 शारदा वर्मा

जन्म - सर्वप्रथम प्रश्न उठता है कन्या के जन्म का। कुछ लोग आक्षेप करते हैं कि वेदों में तथा अन्य वैदिक साहित्य में भी केवल पुत्र–जन्म की ही कामना की गई है, यहां तक कि दस पुत्र उत्पन्न करने का आदेश दिया गया है। इसका अर्थ यह है कि पुत्री जन्म की कामना वेद में नहीं की गई है, किन्तु वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। ऐसे प्रसंगों में पुत्र शब्द से पुत्री का भी ग्रहण होता है। इस प्रकार पुत्र और पुत्री दोनों की समानरूप से कामना की गई है। इस विषय में पाणिनि मुनि प्रमाण है। अष्टाध्यायी के एकशेष प्रकरण के **'भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्'** (पा० १। २।६८) सूत्र के आधार पर स्वसा और दुहिता के साथ भ्राता तथा पुत्र का समास करने पर भ्राता और पुत्र ही शेष रहते हैं यथा–भ्राता च स्वसा च=भ्रातरौ, पुत्रश्च दुहिता च=पुत्रौ। इसी प्रकार माता च पिता च इति 'पितरौ' बनता है। इस प्रकार पुत्र शब्द से पुत्र एवं पुत्री दोनों का ही ग्रहण होता है। इसके अतिरिक्त बृहदारण्यकोपनिषद् में तो विस्तार से पुत्र व पुत्री के जन्म के लिए पृथक्–पृथक् औषधियों व खानपान का भी उल्लेख किया गया है।

शिक्षा - वैदिककाल में स्त्री को भी पुरुष के समान ही पढ़ने–पढ़ाने का अधिकार प्राप्त था। अथर्ववेद ११। ५।१८ का मन्त्र सुप्रसिद्ध है–**''ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।''** यहाँ पर विशेष कथनीय यह है कि यहाँ ब्रह्मचर्य शब्द का अर्थ वेदाध्ययन है। अविवाहित रहकर, संयमपूर्वक शारीरिक ब्रह्मचर्य मात्र इसका अर्थ नहीं है। ब्रह्म का अर्थ वेद है–तत् चरति इति ब्रह्मचारी। चर् धातु गति तथा भक्षण अर्थ में है। गति के तीन अर्थ हैं– ज्ञान, गमन तथा प्राप्ति। इसका अर्थ है कि जो ब्रह्म अर्थात् वेद का ज्ञान तथा प्राप्ति करे वह ब्रह्मचारी है। कन्या भी इसी प्रकार ब्रह्मचारिणी होती थी। वह वेद का अध्ययन करती थी। कालान्तर में ब्रह्मचारी शब्द अविवाहित के अर्थ में रूढ़ हो गया। क्योंकि वेदाध्ययनकाल में छात्र–छात्राएँ अविवाहित ही रहते थे। शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों को सम्मानित स्थान प्राप्त था। यहाँ तक कि चरणसंज्ञक वैदिक शिक्षा केन्द्रों में भी वे प्रविष्ट होकर अध्ययन करती थीं। **'जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'** (पा० ४।१।६३) सूत्र में जातिवाची स्त्री नामों में गोत्र और चरणवाची नामों का ग्रहण सब आचार्यों ने माना है। काशिका में 'कठी' और 'बह्वृची' ये उदाहरण दिये गये हैं। कृष्णयजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा का एक चरण कठ था। उसके संस्थापक आचार्य कठ सुप्रसिद्ध आचार्य वैशम्पायन के अंतेवासी थे। कठ के चरण में विद्याध्ययन करने वाली स्त्रियाँ कठी कहलायीं। इसी प्रकार बृह्वृच नामक ऋग्वेद के चरण में अध्ययन करने वाली ब्रह्मचारिणी कन्या बृहवृची संज्ञा की अधिकारिणी थीं। इससे ज्ञात होता है कि चरणों में जो मान–मर्यादा छात्रों की होती थी। वही छात्राओं के लिए भी थी। मीमांसा और व्याकरण जैसे जटिल विषयों का अध्ययन भी स्त्रियाँ करती थी। इस विषय में पातञ्जल महाभाष्य भी प्रमाण है। महाभाष्य (४।१।१४) में तृतीय वार्त्तिक की व्याख्या में लिखा है–**आपिशलम् अधीते ब्राह्मणी आपिशला।** इसी प्रकार वार्त्तिक पाँच की व्याख्या में **'काशकृत्स्निना प्रोक्ता मीमांसा काशकृत्स्नी, तामधीते काशकृत्स्ना'** लिखा है अर्थात् अपिशलि आचार्य से व्याकरण पढ़नेवाली आपिशला तथा काशकृत्स्नि आचार्य से मीमांसा का अध्ययन करने वाली स्त्री का शकृत्स्त्रा कहलाती थी। इसी प्रकार पाणिनीय व्याकरण का अध्ययन करनेवाली कन्या पाणिनीया कहलाती थी।

अध्यापन - ऐसे प्रमाण भी स्पष्टरूप में पाये जाते हैं कि विदुषी स्त्रियाँ अध्यापन के क्षेत्र में भी योगदान करती थीं जिसके आधार पर वे उपाध्याया तथा आचार्या जैसे गौरवपूर्ण पदों को भी प्राप्त करती थी। मनु ने साङ्गोपाङ्ग वेद के पढ़ानेवाले को ही आचार्य कहा है।१ इसी का स्त्रीलिङ्ग रूप 'आचार्या' है।

विवाह - विवाह का जो आदर्शस्वरूप वेद में वर्णित है वह अन्यत्र दुर्लभ है। विवाह–संस्कार के समय वर वधू से कहता है–**समापः हृदयानि नौ।** अर्थात् हम दोनों के हृदय जल के समान एक हो जाएँ। जिस प्रकार जल से जल को पृथक् नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार पति और पत्नी को भी पृथक् नहीं किया जा सकता। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते हुए वर और वधू का एक वार्तालाप ऋग्वेद (१०।१८३।१२) में दिया गया है। वहां दोनों ओर से एक–दूसरे को युवा–युवति, पुत्रकाम और पुत्रकामा इन शब्दों से सम्बोधित किया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि वेद की सम्मति में उन्हीं स्त्री पुरुषों को विवाहित–जीवन में प्रवेश करना चाहिए जो युवा हो चुके हों।

एकपत्नीत्व - वैदिकधर्म में एक पुरुष की एक ही पत्नी हो सकती है तथा एक स्त्री का एक ही पति हो सकता है। यह नियम जीवनभर के लिए लागू है। अथर्ववेद और ऋग्वेद में विवाह के समय नव वर–वधू को उपदेश दिया है ''कि तुम दोनों पति–पत्नी इस गृहस्थाश्रम की मर्यादा में स्थिर रहो। तुम कभी एक–दूसरे को मत छोड़ो तथा सम्पूर्ण आयु को प्राप्त करो।''

इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्वमार्युव्यश्नुतम्।

– अथर्व० १४।१।२२; ऋग्० १०।८५।४२

अथर्ववेद में वर अपनी वधू को सम्बोधित करके कहता है ''हे पत्नि ! तू मुझ पति के साथ सन्तानवाली हो, तथा सौ वर्ष तक जीवित रहो।'' **मया पत्या प्रजावति सं जीव शरदः शतम्।** (अथर्व० १४।१।५२) कुछ स्त्रियाँ आजीवन कुँवारी रहती थीं। वे बड़ी होने पर वृद्ध कुमारी, जरत्कुमारी कहलाती थी। महाभारत में सुलभा नाम की एक भिक्षुणी का भी उल्लेख आया है।

वेश-भूषा - वेद में स्त्री की वेश–भूषा पर भी प्रकाश डाला गया है जो पैरों तक ढकी हुई होनी चाहिए–**मा ते कश्प्लकौ दृशन् स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ** (ऋग्० ८।३३।१९)। आधुनिकता के प्रतीक स्कर्ट आदि जो वस्त्र आज उपलब्ध हो रहे हैं वे वेद को अभिमत नहीं। स्त्री की वेश–भूषा ऐसी हो जिससे उसका शरीर अधनङ्गा न रहकर भली प्रकार आच्छादित रहे। वेद में स्त्री के मुख ढकने का विधान नहीं है अर्थात् परदाप्रथा वेदानुकूल नहीं है।

दहेज - वेद में प्रतीकरूप में सूर्या और सोम के आदर्श विवाह का उल्लेख किया गया है जिसमें दहेज के रूप में वैदिक–ज्ञान का ही प्राधान्य है, किसी प्रकार के धनादि का नहीं। आज दहेज के रूप में धन के प्राधान्य के कारण ही समाज नारकीय स्थिति को प्राप्त हो चुका है। अनेक युवतियाँ इस दानव से त्रस्त होकर आत्महत्याएँ कर रही हैं। स्वाधीन भारत में यह राष्ट्र एवं समाज के नाम पर कलंक है।

विवाह में परस्पर सहमति तथा आकर्षण - वैदिकधर्म में उन्हीं स्त्री–पुरुषों का विवाह–सम्बन्ध हो सकता है जिन्होंने एक–दूसरे को भली प्रकार जान लिया है और देख लिया है। ऋग्वेद के दशवें मण्डल के १८३वें सूक्त में विवाह करने की इच्छावाली वधू अपने भावी पति का सम्बोधन करके कहती है–'हे वर ! मैंने अपने मन–से अच्छी प्रकार तुम्हें जान लिया है तुम बहुत अच्छे ज्ञानी हो और गुरुकुल में तप का, सादगी और संयम का जीवन व्यतीत करके आये हो और तुम्हें सन्तान की कामना है। आइए हम दोनों मिलकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करें।'' इसी प्रकार वरवधू से कहता है–''हे वधू ! मैंने तुम्हें अपने मन से जान लिया है तुम उच्च गुणों वाली युवति हो और मुझे चाह रही हो, तुम्हें सन्तान की कामना भी है। आओ हम मिलकर सन्तानोत्पत्ति करें।''

अथर्ववेद (२।३६।५) में वधू से कहा गया है कि 'हे वधू ! तुम ऐश्वर्य की नौका पर चढ़ो और अपने पति को जो कि तुमने स्वयं पसन्द किया है, संसार सागर के परले पार पहुँचा दो।''२ अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि परस्पर सहमति के बिना वर–वधू का विवाह नहीं होना चाहिए।

किन्तु इस विवाह सम्बन्ध में वर–वधू की अभिरुचि के साथ–साथ माता–पिता तथा गुरुजनों की सलाह भी परमावश्यक है यथा–**'मनसा सविता ददात्'** (अथर्व० १४।१।६) के अनुसार–'कन्या को उत्पन्न करनेवाला पिता अपने मन से सारी बातें सोच–समझकर कन्या को पति के हाथ में देता है।' उसी मन्त्र में कहा है **''अश्विनास्तामुभावरा''** अर्थात् वर और कन्या के माता–पिता कन्या और वर को पसन्द करनेवाले बनते हैं। वैदिक विवाह में माता–पिता और समाज की सहमति भी आवश्यक है– विवाह में उपस्थित लोगों को विश्वेदेवा कहा गया है। आज के समान लड़के, लड़की द्वारा की गई Court Marriage वेद को अभिमत नहीं है।

परिवार में स्थिति - विवाहोपरान्त भी स्त्री को गौरवपूर्ण साम्राज्ञी का स्थान दिया गया है। सम्राट् का अर्थ है शासन करनेवाला। उसका स्त्रीलिङ्ग रूप साम्राज्ञी का सामान्यतः अर्थ शासन करनेवाली किया जाता है, किन्तु वेद३ में इसी प्रसङ्ग में अन्य मन्त्रों के द्वारा साम्राज्ञी के स्वरूप को स्पष्ट कर दिया गया है–जिस प्रकार नदी समुद्र में जाकर मिल जाती है, उसका स्वरूप पूरी तरह समुद्र में विलीन हो जाता है, बदले में समुद्र उसे अपना विशालतम स्वरूप प्रदान कर देता है। अब वह नदी नहीं, समुद्र कहलाती है। इसी प्रकार नववधु ससुराल में जाकर मिल जाए। यदि आज भी वेद का यह आदर्श स्वरूप अपना लिया जाए तो आज सामाजिक उत्पीड़न की समस्याएँ उत्पन्न ही न हों। परिवार में स्त्री किसी के आश्रित नहीं है जैसा कि परवर्त्ती साहित्य में अनेक श्लोक रच कर स्त्री की स्थिति को दयनीय बना दिया गया। यथा–

पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने।
पुत्राः रक्षन्ति वार्द्धक्ये न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।।

यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि कन्या कुमार अवस्था में विद्याध्ययन के लिए शिक्षणालय में चली गयी है। अतः विद्याध्ययन काल में उसकी रक्षा का प्रश्न ही नहीं है। गृहस्थ जीवन में भी वह स्वयं तेजस्विनी है, परिवार की पोषिका है यहाँ तक कि वह परिवार का आधार है। तभी कहा है जाया इत् अस्तम् (ऋ० ३/५/४) पत्नी ही घर है। **''न गृहं गृहमुच्यते गृहिणी गृहमुच्यते।''**

वेद के अनुसार वह अपने कार्यों के द्वारा प्रशंसित है तथा उसमें अपने पुत्र पुत्रियों को भी अपनी तरह ही साहसी बनाया है। वह घोषणा करती है–

मम पुत्राः शत्रुहणो अथो मे दुहिता विराट्।
उताहमस्मि संज्ञया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः।।

ऋ० १०/१५९/३

अर्थात् मेरे पुत्र शत्रु को नष्ट करने वाले हैं। मेरी पुत्री अपने गुणों से 'विशेषेण राजते इति विराट्' है। मैं स्वयं अपने नाम के द्वारा प्रसिद्ध हूँ। मेरे पति पर भी मेरी उत्तम कीर्ति व्याप्त है। जो लोग वेद में पुत्री की उपेक्षा की बात करते हैं उनको वेद के 'दुहिता विराट्' शब्द पर ध्यान देना चाहिए।

इतना ही नहीं अपितु वैदिक नारी अपने पति को गृह कार्यों में भी उचित परामर्श देकर उसकी सहायिका बनती है। अथर्ववेद १४।१।२० में कहा गया है–**त्वं विदथम् आवदासि।** अर्थात् हे पत्नी, तू हमें ज्ञान का उपदेश कर। पत्नी पति को धन प्राप्ति के उपाय भी बतलाती है–**पतिं देवि राधसे चोदयस्व** (अथर्व० ७।४६।३) पति कहता है–तू सब–कुछ जानने वाली हमें धन–धान्य की पुष्टि दे– **''आद्य रायस्पोषं चिकितुषी दधातु''** (अथर्व० ७।४७।२)। ''तू हमारे घर की प्रत्येक दिशा में ब्रह्म अर्थात् वैदिक ज्ञान का प्रयोग कर'' **''ब्रह्मापरं युज्यतां ब्रह्म पूर्वं ब्रह्मान्ततों मध्यतो ब्रह्म सर्वतः''** (अथर्व० १४।१।६४)। इन सब वचनों से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि वेद की सम्मति में प्रत्येक स्त्री को विवाह से पूर्व, जहाँ तक हो सके, सब प्रकार के ज्ञान प्राप्त कर लेने चाहिएँ ताकि वह गृहस्थ जीवन में उनका यथायोग्य उपयोग कर सके। अथर्ववेद १।१४।३ में कन्या के लिए कुलपा = (कुल का पालन करनेवाली) शब्द आया है। इसी प्रकार यजुर्वेद (१४।२) में 'पुरन्धि' शब्द भी इसी अर्थ में पठित है। अथर्ववेद (१४।१।४२) में पत्नी को सौमनस्य, सौभाग्य तथा ऐश्वर्य की कामना करने के लिए कहा गया है, किन्तु यह तभी सम्भव है जबकि वह पति के व्रत का अनुगमन करनेवाली हो। भाव यह है कि ऐसा करने से ही घर में सौमनस्य तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी अन्यथा नहीं। इसी अभिप्राय से अथर्ववेद (२।३६।४) में भी पत्नी को पति से विरोध न करनेवाली=**'पत्याऽविराधयन्ती'** कहा है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में स्त्री का अत्यन्त ही तेजस्वी स्वरूप इस प्रकार वर्णित है। स्त्री कहती है कि मैं ध्वज के तुल्य अग्रगण्य हूँ। मैं ही मूर्धा के समान प्रमुख हूँ। आवश्यकता पड़ने पर मैं उग्र स्वरूपवाली भी हो जाती हूँ तथा मैं श्रेष्ठ वक्ता भी हूँ। मेरे यशस्वी कार्यों के अनुरूप ही मेरा पति आचरण करे।४ इसी प्रकार ऋग्वेद के ही एक अन्य मन्त्र में स्त्री को शत्रुनाशक, विजयिनी कहा है।५

कुछ लोग आक्षेप करते हैं कि वेद में स्त्रियों के साथ सखाभाव का निषेध किया गया है।६ यह भेदपूर्ण स्थिति है। इसका उत्तर यह है कि आचरण की शुद्धता और चारित्रिक दृष्टिकोण के कारण ऐसा कहा गया है। वेद में पति का पत्नी के प्रति सखाभाव रखने का स्पष्ट उल्लेख है, किन्तु सभी स्त्रियों के साथ सखाभाव का औचित्य नहीं है जैसाकि आजकल स्कूल–कॉलेजों में तथा अन्यत्र भी Girl Friend तथा Boy Friend की प्रथा चल पड़ी है। इससे अनेक चारित्रिक दोष पैदा हो रहे हैं। चारित्रिक शुद्धता के कारण ही मनुस्मृति में तो यहाँ तक प्रतिबन्ध लगा दिया गया है कि माता, बहिन तथा बेटी के साथ एक ही आसन पर न बैठे। कितनी व्यवहारिक बात है। संग से चारित्रिक दोष उत्पन्न हो सकता है इसीलिए वेद में स्त्री के साथ मैत्रीभाव का निषेध किया गया है।

अन्य वैदिक-साहित्य–वेद के समान ब्राह्मण–गन्थों में भी स्त्री को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। शतपथ ब्राह्मण७ में पत्नी को पति का आधा भाग मानकर यहाँ तक कह दिया गया है कि जब तक व्यक्ति पत्नी को प्राप्त नहीं कर लेता तब तक अपूर्ण ही रहता है। इसी प्रकार के भाव ऐतरेय आरण्यक८ में भी प्रकट किये गये हैं। उपनिषद् काल में भी नारी की यही बहुत उत्कृष्ट स्थिति रही है। उपनिषद् काल में नारी ब्रह्मवादिनी रही है। याज्ञवल्क्य के साथ शास्त्रार्थ में गार्गी याज्ञवल्क्य जैसे ब्रह्मवेत्ता को भी शास्त्रार्थ में निरुत्तर कर देती है। इसी प्रकार मैत्रेयी सांसारिक भोग, ऐश्वर्य, धन–धान्य की अपेक्षा ज्ञान प्राप्त करने को प्रमुखता देती है। यह है उपनिषद्कालीन नारी का गौरवपूर्ण इतिहास।

स्मृति ग्रन्थों में भी नारी की अति–सम्माननीय स्थिति का चित्रण है। मनुस्मृति में भी भार्या को मनुष्य का आधा भाग तथा श्रेष्ठतम सखा कहा गया है।९ मनुस्मृति का वह श्लोक तो सर्वविदित ही है जिसमें कहा गया है कि जहाँ स्त्रियों का सत्कार होता है। वहाँ देवता निवास करते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक अन्य श्लोक की तरफ आपका ध्यान आकृष्ट कराना चाहती हूँ जिसमें कहा गया है, कि जहां नारियों का उत्पीड़न होता है उनपर अत्याचार होता है वे रोती हैं, पीड़ित होती हैं, वह समाज और शब्द नष्ट हो जाता है।१० आज के सभ्य समाज में नारी का अनेक प्रकार से शोषण हो रहा है, उसका उत्पीड़न हो रहा है अतः आज हमारा समाज तथा राष्ट्र–पतन की ओर ही उन्मुख है, घरों से सुख–शान्ति मानो विदा हो चुकी है।

हमें इस ओर विचार करना चाहिए। द्वापर युग में अकेली द्रौपदी पर हुए अत्याचार ने महाभारत करा दिया था। आज तो न जाने कितनी ललनाएँ उससे भी गयी–बीती दशा को प्राप्त कर रही हैं। आज का तथाकथित सभ्य समाज क्या इस ओर ध्यान देगा।

अध्यक्ष - संस्कृत विभाग, वैश्य आर्यकन्या महाविद्यालय, बहादुरगढ़ (हरियाणा)।

महर्षि दयानन्द एवं ब्रह्मचर्य

– स्वामी इन्द्रवेश (ब्र. इन्द्रदेव मेधार्थी'

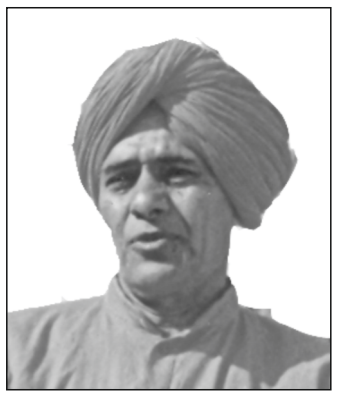

समय-समय पर अनेक ऐसे लोकोत्तर महापुरुष हुए हैं जिन्होंने अपनी अद्भुत प्रतिभा एवं कर्म-शीलता से संसार में मानवता की स्थापना की है और ब्रह्मचर्य को अपने जीवन में धारण करने के साथ-साथ लोक में भी प्रचार करने का यत्न किया है। किन्तु इस विषय में जितना उत्कर्ष महर्षि दयानन्द जी महाराज को उपलब्ध हुआ ऐसा अन्य महापुरुषों के जीवन में प्रायः नहीं दीख पड़ता। ब्रह्मचर्य का विकास उनके जीवन में अन्तिम सीमा तक पहुँचा हुआ था। उनको हम ब्रह्मचर्य की साक्षात् साकार प्रतिमा एवं आप्त पुरुष मान सकते हैं। ब्रह्मचर्य शब्द की संसार में जितनी व्याख्याएँ विद्यमान हैं, उस सबके वे आदर्श उदाहरण स्वरूप हैं। उनके ब्रह्मचर्य के इस महान् गुण को सभी विरोधी एवं प्राणघाती शत्रुओं तक ने भी मुक्तमण्ठ से स्वीकार किया है।

ब्रह्मचर्य का पालन सामान्य कार्य नहीं है। जिन लोगों को इस मार्ग पर चलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, वही इसकी दुरूहता को अनुभव कर पाते हैं। वास्तव में यह कार्य तलवार की धार पर चलने से भी कठिनतम साधना है। मन या आचरण की क्षणिक असावधानी बहुत भयंकर परिणाम को लाकर उपस्थित कर सकती है। ब्रह्मचर्य रक्षा की चिन्ता योगियों की उन्निद्र आँखों में, ऋषियों के चेहरों की झुर्रियों में और ब्रह्मचारियों की नियमित नियन्त्रित दिनचर्या में किसे नहीं दीख पड़ती? वास्तव में यह एक कठिन परीक्षा है, तपस्या है। बिना ब्रह्मचारी बने कोई भी मनुष्य भगवान् को भी नहीं पा सकता। महर्षि दयानन्द एक निष्कलंक ब्रह्मचारी थे। जो मनुष्य अपने जीवन को जीवन रूप में देखना चाहते हैं, तथा मानव जीवन के आनन्द का उपभोग करना चाहते हैं, उन्हें इस ब्रह्मचर्य मार्ग का पथिक अवश्य बनना चाहिए। वर्तमान युग में लोग ब्रह्मचर्य पालन को असम्भव सा मान बैठे हैं। किन्तु निराश होने की आवश्यकता नहीं। मनुष्य पतन के गर्त में जाने के पश्चात् भी तथा कुसंस्कारों से परिवेष्टित होने पर भी यत्न करके अपने जीवन को पवित्र बना सकता है। हमारे समक्ष महर्षि दयानन्द जी जैसे दिव्य ब्रह्मचारियों के जीवन तथा आदेश प्रकाश-स्तम्भ के रूप में उपस्थित हैं। जिस मनुष्य को जीवन में ब्रह्मचर्य रक्षा के आनन्द का एक बार भी आस्वादन हो गया, बस फिर तो वह इस अमूल्य रत्न के लिए सर्वस्व वारने को भी उद्यत हो जाता है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने 'सब सुधारों का सुधार' ब्रह्मचर्य को ही माना है।

जिस आर्य जाति में किसी समय ब्रह्मचर्य को सर्वोपरि स्थान दिया जाता था और जीवन का सारा कार्यक्रम ब्रह्मचर्य पालन को मुख्य मानकर निर्धारित होता था, आज वही जाति ब्रह्मचर्य से हीन होकर पद्दलित हो चुकी है। आज की कामज सन्तान और फिर ये नाच-गाने, स्वाङ्ग-सिनेमा तथा शृंगार की प्रधानता ब्रह्मचर्य को समूल नष्ट करने पर तुले हुए हैं, किन्तु यह निश्चित ही सत्य सिद्धान्त है कि ब्रह्मचर्य की समाप्ति के साथ संसार की भी इतिश्री हो जावेगी। जो मनुष्य थोड़ी भी बुद्धि रखते हैं, उनका प्रधान कर्त्तव्य है कि वे अपने भोजन, दिनचर्या, वेशभूषा, पठन-पाठन तथा अन्य वाह्य एवं आन्तरिक व्यवहार को ब्रह्मचर्य के अनुकूल बनावें और ब्रह्मचर्य के सन्देश को अपनी शक्ति अनुसार चारों दिशाओं में फैला दें। महर्षि दयानन्द जी ने किन मौलिक तत्वों को जीवन में धारण करके ब्रह्मचर्य में सिद्धि प्राप्त की थी यह तो पृथक ही लेख का विषय है। हम लोग ब्रह्मचर्य के महत्व को समझ सकें यही अभीष्ट है, अतः महर्षि के ग्रन्थों से ब्रह्मचर्य विषयक वचनों का संग्रह मैं पाठकों के समक्ष उपस्थित कर रहा हूँ। हमारा सभी का कर्त्तव्य है कि हम अपने आचार्य के दिव्य वचनों को धारण करके जीवन को पवित्र बनावें।

महर्षि के दिव्य वचन

1. मनुष्य ब्रह्मचर्यादि उत्तम नियमों से त्रिगुण, चतुर्गुण आयु कर सकता है, अर्थात् चार सौ वर्ष तक भी सुख से जी सकता है। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका वेद वि०)

2. जिसके शरीर में वीर्य नहीं होता, वह नपुंसक, महाकुलक्षणी होता है और जिसको प्रमेह रोग होता है, वह दुर्बल, निस्तेज-निर्बुद्धि और उत्साह-साहस-धैर्य-बल पराक्रम आदि गुणों से रहित होकर नष्ट हो जाता है। (सत्यार्थप्रकाश 2 समु०)

3. आयु वीर्यादि धातुओं की शुद्धि और रक्षा करना तथा युक्ति पूर्वक ही भोजन-वस्त्र का जो धारण करना है, इन अच्छे नियमों से आयु को सदा बढ़ाओ। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका वेदोक्त धर्म विद्या)

4. देखो, जिसके शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता है, उसको आरोग्य, बुद्धि, बल और पराक्रम बढ़ कर बहुत सुख की प्राप्ति होती है। इसके रक्षण की यही रीति है कि विषयों का ध्यान, स्त्री दर्शन, एकान्त सेवन, सम्भाषण और स्पर्श आदि कर्म से ब्रह्मचारी लोग सदा पृथक रहकर उत्तम शिक्षा और पूर्ण विद्या को प्राप्त होवें। (सत्यार्थप्रकाश 2 समु०)

5. जो तुम लोग सुशिक्षा और विद्या के ग्रहण और वीर्य रक्षा में इस समय चूकोगे तो पुनः इस जन्म में तुमको यह अमूल्य समय प्राप्त नहीं हो सकेगा। जब तक हम लोग गृह कार्यों को करने वाले जीते हैं, तभी तक तुमको विद्या ग्रहण और शरीर का बल बढ़ना चाहिए। (सत्यार्थप्रकाश 2 समु०)

6. जो सदाचार में प्रवृत्त, जितेन्द्रिय और जिनका वीर्य अधःस्खलित कभी न हो उन्हीं का ब्रह्मचर्य सच्चा होता है। (सत्यार्थप्रकाश समु0-4)

7. जिस देश में ब्रह्मचर्य और विद्याभ्यास अधिक होता है, वही देश सुखी और जिस देश में ब्रह्मचर्य, विद्या ग्रहण रहित बाल्यावस्था वाले अयोग्यों का विवाह होता है, वह देश दुखः में डूब जाता है। क्योंकि ब्रह्मचर्य और विद्या के ग्रहण पूर्वक विवाह के सुधार ही से सब बातों का सुधार और बिगड़ने से ही बिगाड़ होता है। (सत्यार्थप्रकाश समु०-4)

8. जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है, वही देश सौभाग्यवान् होता है। (सत्यार्थप्रकाश समु0-3)

9. ब्रह्मचर्य जो कि सब आश्रमों का मूल है। उसके ठीक-ठीक सुधारने से सब आश्रम सुगम होते हैं। और बिगड़ने से बिगड़ जाते हैं। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका वर्णाश्रम विषय)

10. सर्वत्र एकाकी सोवें। वीर्य स्खलित कभी न करे। जो कामना से वीर्य स्खलित कर दे तो जानो कि अपने ब्रह्मचर्य व्रत का नाश कर दिया। (सत्यार्थप्रकाश समु0-3)

11. ब्रह्मचर्य सेवन से यह बात होती है कि मनुष्य बाल्यावस्था में विवाह न करे। उपस्थेन्द्रिय का संयम रखे। वेदादिशास्त्रों को पढ़ते-पढ़ाते रहें। विवाह के पीछे भी ऋतुगामी बने रहें। तब दो प्रकार का वीर्य अर्थात् बल बढ़ता है, एक शरीर का और दूसरा बुद्धि का उसके बढ़ने से मनुष्य अत्यन्त आनन्द में रहता है। (ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका उपासना विषय)

12. अड़तालीस वर्ष के आगे पुरुष और चौबीस वर्ष के आगे स्त्री को ब्रह्मचर्य न रखना चाहिए। परन्तु यह नियम विवाह करने वाले पुरुष और स्त्रियों के लिए है। और जो विवाह करना ही न चाहें वे मरण पर्यन्त ब्रह्मचारी रह सकें तो भले ही रहें। परन्तु यह काम पूर्ण विद्या वाले, जितेन्द्रिय और निर्दोष योगी स्त्री और पुरुष का है। यह बड़ा कठिन कार्य है कि जो काम के वेग को थाम के इन्द्रियों को अपने वश में रख सके। (सत्यार्थप्रकाश समु०-3)

13. ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी मद्य, मांस, गन्ध, माला, रस, स्त्री और पुरुष का संग, सब खटाई, प्राणियों की हिंसा, अंङ्गों का मर्दन, बिना निमित्त उपस्थेन्द्रिय का स्पर्श, आंखों में अंजन, जूतों और छत्रधारण, काम-क्रोध, लोभ-मोह-भय-शोक-ईर्ष्याद्वेष, नाच-गान और बाजा बजाना, द्यूत, जिस किसी की कथा, निन्दा, मिथ्या भाषण स्त्रियों का दर्शन-आश्रय, दूसरों की हानि आदि कुकर्मों को छोड़ देवें। (सत्यार्थप्रकाश तृतीय समु०)

14. पाठशाला से एक योजन अर्थात् चार कोस दूर ग्राम वा नगर रहे। (सत्यार्थप्रकाश समु०-3)

15. जहां विषयों वा अधर्म की चर्चा भी होती हो, वहां ब्रह्मचारी कभी खड़े भी न रहें। भोजन छादन ऐसी रीति से करें कि जिससे कभी रोग-वीर्य हानि, वा प्रमाद न बढ़े। जो बुद्धि का नाश करने हारे नशे के पदार्थ हों उनको ग्रहण कभी न करें। (व्यवहार भानु)

16. जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियता आदि की बढ़ती होवे और अविद्या आदि दोष छूटें, उसको शिक्षा कहते हैं। (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)

17. सबको तुल्य वस्त्र खान-पान और तुल्य आसन दिये जावें। चाहे वे राजकुमार वा राजकुमारी हों, चाहे दरिद्र की सन्तान हों। सब को तपस्वी होना चाहिए। (सत्यार्थप्रकाश समु०-3)

18. उनके माता-पिता अपनी सन्तानों से वा सन्तान माता-पिता से न मिल सकें और न किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार एक दूसरे से कर सकें। जिससे संसारिक चिन्ता से रहित होकर केवल विद्या पढ़ने की चिन्ता रखें। जब भ्रमण को जावें, तब उनके साथ अध्यापक रहें। जिससे किसी प्रकार की कुचेष्टा न कर सकें और न आलस्य प्रमाद करें। (सत्यार्थप्रकाश समु०-3)

19. जो वहां पर अध्यापिका और अध्यापक पुरुष वा भृत्य अनुचर हों, वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में पांच वर्ष का लड़का और पुरुषों की पाठशाला में पांच वर्ष की लड़की भी न जाने पावे। अर्थात् जब तक वे ब्रह्मचारी वा ब्रह्मचारिणी रहें, तब तक स्त्री वा पुरुष का दर्शन-स्पर्शन, एकान्त सेवन, भाषण, विषय, कथा, परस्पर पर क्रीड़ा, विषय का ध्यान और सङ्ग इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहें और अध्यापक लोग उनको इन बातों से बचावें। जिससे उत्तम विद्या, शिक्षाशील स्वभाव शरीर और आत्मा से बलयुक्त होके आनन्द को सदा बढ़ा सके। (सत्यार्थप्रकाश समु०-3)

20. यथावत् ब्रह्मचर्य में आचार्यानुकूल वर्त कर धर्म से चारों, तीन या दो अथवा एक वेद को साङ्गोपाङ्ग पढ़के जिसका ब्रह्मचर्य खण्डित न हुआ हो वह पुरुष वा स्त्री गृहाश्रम में प्रवेश करें। (सत्यार्थ प्रकाश समु०-4)

21. स्त्रियाँ आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण करती थीं, और साधारण स्त्रियों के भी उपनयन और गुरु गेह में वासादि संस्कार होते थे। (उपदेश मंजरी)

22. ब्रह्मचर्य पूर्ण करके गृहस्थ और गृहस्थ होके वानप्रस्थ तथा वानप्रस्थ होके संन्यासी होवे। (संस्कार विधि विवाह संकार)

23. परन्तु जो ब्रह्मचर्य पूर्ण से संन्यासी होकर जगत् को सत्य शिक्षा का जितनी उन्नति कर सकता है, उतनी गृहस्थ वा वानप्रस्थ आश्रम करके संन्यास आश्रमी नहीं कर सकता। (सत्यार्थप्रकाश समु०-5)

24. जिस पुरुष ने विषय के दोष और वीर्य संरक्षक के गुण जाने हैं, वह विषयासक्त कभी नहीं होता, और उनका वीर्य विचार अग्नि का ईंधन वत् है। अर्थात् उसी में व्यय हो जाता है। जैसे वैद्य और औषधियों की आवश्यकता रोगी के लिये होती है, वैसे निरोगी के लिये नहीं, इस प्रकार जिस स्त्री वा पुरुष को विद्या, धर्म वृद्धि और सब संसार का उपकार करना ही प्रयोजन हो, वह विवाह न करे। (सत्यार्थप्रकाश समु०-5)

25. जो मनुष्य इस ब्रह्मचर्य को प्राप्त होकर लोप नहीं करते, वे सब प्रकार के रोगों से रहित होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होते हैं। (सत्यार्थप्रकाश समु०-3)

26. सब आश्रमों के मूल, सब उत्तम कर्मों में उत्तम कर्म और सब के मुख्य कारण ब्रह्मचर्य को खण्डित करके महादुःख सागर में कभी नहीं डूबेगा। (संस्कार विधि वेदारम्भ)

27. यदि कोई इस सर्वोत्तम धर्म से गिरना चाहे, उसको ब्रह्मचारी उत्तर देवे कि अरे छोकरों के छोकरे! मुझ से दूर रहो। तुम्हारे दुर्गन्ध रूप भ्रष्ट वचनों से मैं दूर रहता हूँ। मैं इस उत्तम ब्रह्मचर्य का लोप कभी न करूँगा। (संस्कार विधि वेदारम्भ)

इस प्रकार महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपने ग्रन्थों एवं प्रवचनों में ब्रह्मचर्य को जीवन का मूल आधार बताया है। यदि हम चाहते हैं कि हमारा देश पुनः अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करे तो इसके लिए सब आर्यों को कटिबद्ध होना चाहिए। ●

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली, रोहतक, हरियाणा में 6 से 12 जून, 2022 तक आयोजित राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण व योग शिविर का उद्घाटन भव्यता के साथ प्रारम्भ

एक वर्ष में एक लाख नवयुवकों को आर्य समाज से जोड़ेगा आर्य समाज

– स्वामी आर्यवेश

प्राचीन संस्कृति की सुरक्षा में बहनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहेगा – सुरेश सिंगला

शिक्षित व संस्कारित नारी ही मानव का निर्माण कर सकती है – बहन पूनम आर्या

बहनों को मानसिक रूप से मजबूती प्रदान करना हमारा लक्ष्य – बहन प्रवेश आर्या

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी संन्यासी, युवाओं के प्रेरणास्रोत, आर्यनेता पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की पुण्यतिथि की स्मृति में आयोजित राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर का उद्घाटन 6 जून, 2022 (सोमवार) को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली आश्रम, रोहतक, (हरियाणा) के परिसर में भव्यता के साथ प्रारम्भ हुआ। शिविर का उद्घाटन समाजसेवी श्री सुरेश सिंगला जी, चीफ अकाउंटेंट ने किया। शिविर की अध्यक्षता बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या ने की।

आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, बेटी बचाओ अभियान एवं युवा निर्माण अभियान के संयुक्त तत्वावधान में लगाये गये इस शिविर में बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि शिक्षित व संस्कारित नारी ही मानव का निर्माण कर सकती है। माँ बच्चे का पहला गुरु होती है। यदि गुरु ही संस्कारित नहीं होंगे तो बच्चों में संस्कार कैसे पैदा होंगे। इसलिए सरकारों से हमारी मांग है कि नारी को शिक्षित एवं संस्कारित करने के लिए पूरी ताकत लगानी चाहिए। उन्होंने शिविर में भाग लेने वाली बहनों को जीवन में संस्कार, चरित्र, ईमानदारी, नैतिकता, राष्ट्रभक्ति व ईश्वर भक्ति को अपनाने का संकल्प दिलवाया।

इस शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री सुरेश सिंगला जी ने कहा कि आप सबसे पहले जीवन का लक्ष्य निर्धारित करें। उसके बाद उसे प्राप्त करने के लिए सकारात्मक ऊर्जा के साथ कार्य करें जिससे जीवन में सफलता मिल सके और लक्ष्य की प्राप्ति हो सके। जो लोग लक्ष्य को केन्द्रित करके कार्य करते हैं उन्हें सफलता प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता। उन्होंने कहा कि आज हमारी प्राचीन संस्कृति को नष्ट करने का षड्यंत्र चल रहा है। हमारी बहनें अपनी प्राचीन संस्कृति को बचाने में अहम् भूमिका निभा सकती हैं। उन्होंने हरियाणा में बेटी व बेटे के लिंगानुपात में सुधार का श्रेय बहन पूनम आर्या व बहन प्रवेश आर्या के नेतृत्व में संचालित बेटी बचाओ अभियान को दिया।

शिविर की संयोजक एवं बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या जी ने कहा कि जीवन में मानसिक ताकत शारीरिक ताकत से ज्यादा शक्तिशाली होती है, जिसका प्रशिक्षण इस शिविर में दिया जाता है। इस शिविर के माध्यम से बहनों को मानसिक रूप से सशक्त बनाने की कला को सिखाया जाता है, जिससे हमारी बहनें हर क्षेत्र में मानसिक रूप से मजबूती के साथ आगे बढ़ सकें। हमारा लक्ष्य है कि कोई भी बहन मानसिक रूप से कमजोर न रहे, बल्कि पूरी ताकत के साथ समाज के हर क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका निभायें।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या के सान्निध्य में चलने वाले शिविर में योगासन, प्राणायाम के अतिरिक्त स्वयं सुरक्षा के लिए जूडो–कराटे, कमांडो, लाठी का प्रशिक्षण अनुभवी प्रशिक्षिकाओं द्वारा दिया जा रहा है।

इस अवसर पर शिविर की निदेशक रिंकू आर्या, सह निदेशक शशि आर्या, सुषमा आर्या, छवि आर्या, प्रीति आर्या, प्रभा, पूजा आर्या, राजबीर वशिष्ठ, महेंद्र शास्त्री सहित बेटी बचाओ अभियान की पूरी टीम उपस्थित रही।

राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण व योग शिविर में दूसरे दिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने शिविर में उपस्थित शिविरार्थियों व आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस वर्ष एक लाख नए युवकों को आर्य समाज से जोड़ने का लक्ष्य रखना चाहिए जिससे युवाओं को अश्लीलता, नशाखोरी एवं अन्य व्यसनों से बचाया जा सके। स्वामी जी ने कहा कि युवाओं के अन्दर नैतिकता एवं चरित्र निर्माण के गुण कूट–कूट कर भर दिये जायें जिससे देश के नवयुवक समाजहित, राष्ट्रहित व मानवहित के कार्य में अपने आपको समर्पित करके देश को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। देश के नौजवानों के चरित्र निर्माण एवं संस्कारों की योजनाओं पर कार्य करने के लिए आज की सरकारों तथा राजनीतिक पार्टियों में उदासीनता दिखाई देती है। इसलिए सामाजिक व धार्मिक नेताओं को आगे आकर सामूहिक प्रयास करने चाहिए जिससे युवाओं को सुसंस्कारित करने में महती भूमिका निभाई जा सके। आर्य समाज का सामाजिक एवं क्रांतिकारी संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, आर्य वीर दल, आर्य युवा समाज आदि युवा संगठन युवाओं को जोड़ने के कार्यक्रम निश्चित करके पूरे देश में जन–जागृति पैदा करने का कार्य और तीव्र गति से करने का प्रयास करें।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजिका बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि आर्य समाज हमेशा से ही देश को एक नई दिशा देने का कार्य करता है। आज बहनों को योग से आत्मिक व साधना से आध्यात्मिक मजबूती देने के उद्देश्य से कार्य किए जा रहे हैं।

मनुर्भव फाउंडेशन की राष्ट्रीय अध्यक्षा मुकेश आर्या जी ने कहा कि योग को जीवन का हिस्सा बना लो तो जिन्दगी में सकारात्मक बदलाव शुरू हो जायेंगे। आज की भागदौड़ में योग व साधना का बहुत महत्व है।

शिविर की निदेशक रिंकू आर्या ने बताया कि कार्यक्रम का समापन 12 जून को होगा। त्यागी, तपस्वी, आर्य नेता, युवाओं के प्रेरणास्रोत आर्य संन्यासी पूर्व सांसद स्वामी इन्द्रवेश जी की पुण्यतिथि के अवसर पर युवा संकल्प समारोह का आयोजन किया जाएगा तथा कन्याओं द्वारा आसान, प्रणायाम, जूडो–कराटे, लाठी चलाना, स्तूप आदि का व्यायाम प्रदर्शन किया जाएगा। बेटियाँ प्रतिदिन यज्ञ करके कार्यक्रम को प्रारंभ करती हैं।

इस शिविर में राजस्थान से पहुंची छवि आर्या स्वयं सुरक्षा की ट्रेनिंग दे रही हैं जबकि योग की शिक्षा नेशनल गोल्ड मेडलिस्ट राजकुमारी आर्या दे रहीं हैं।

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही भारत को विश्व गुरु के सम्मान से विभूषित कर सकती है – स्वामी आर्यवेश

गुरुकुलीय शिक्षा एवं दिनचर्या बालक का सर्वांगीण विकास करती है – स्वामी प्रणवानन्द

संस्कारों के बिना शिक्षा अधूरी है – आचार्य सोमदेव शास्त्री

आर्ष शिक्षा सृष्टि के प्रारम्भ से ही प्रचलित रही है – योगेन्द्र याज्ञिक

वैदिक शिक्षा से मनुष्य जीवन सार्थक बन सकता है – डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा

गुरुकुलों की सभी आवश्यकताओं को पूरा करेंगे महाशय राजीव गुलाटी (एम.डी.एच.) – अनिल अरोड़ा

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौन्धा–देहरादून आर्यजगत का एक प्रसिद्ध गुरुकुल है जिसने 22 वर्ष पूर्व अपनी स्थापना के बाद अनेक उल्लेखनीय कार्य किये हैं। इसके छात्रों ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सम्मान प्राप्त करके प्रतिष्ठा पाई है। गुरुकुल प्रत्येक वर्ष जून महीने के प्रथम रविवार व उससे पूर्व के शनिवार एवं शुक्रवार तीन दिवसों में अपना वार्षिकोत्सव आयोजित करता आ रहा है। यह परम्परा विगत 21 वर्षों से चली आ रही है जिसमें दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हिमाचल प्रदेश एवं देश के अनेक भागों से ऋषिभक्त श्रद्धापूर्वक भाग लेते हैं। गुरुकुल का 22वां वार्षिकोत्सव शुक्रवार दिनांक 3 जून, 2022 को सोल्लास आरम्भ हुआ। प्रातः 7.00 बजे यज्ञोपासना के अन्तर्गत वेदपारायण यज्ञ आरम्भ हुआ जिसमें गुरुकुल के 4 ब्रह्मचारियों ने वेदमन्त्रों का पाठ किया। यज्ञ के ब्रह्मा आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान डा. सोमदेव शास्त्री जी, मुम्बई थे। यज्ञ का संचालन डा. आचार्य यज्ञवीर जी ने किया। तीन वृहद कुण्डों में यज्ञ किया गया जिसके चारों ओर यजमानों ने बैठकर यज्ञाग्नि में घृत एवं साकल्य की श्रद्धापूर्वक आहुतियां दीं। यज्ञ के मध्य में यज्ञ के ब्रह्मा जी ने अपने उपदेश में कहा कि मनुष्य को अपने शरीर को निषिद्ध कर्मों को करके गन्दा नहीं करना चाहिये। गुरुकुल के आचार्य धनंजय जी ने वार्षिकोत्सव में पधारे सभी विद्वानों एवं श्रोता अतिथियों का स्वागत एवं अभिनन्दन किया। आयोजन में उपस्थित स्वामी चित्तेवरानन्द सरस्वती जी का उपदेश हुआ।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने ध्वजारोहण किया। ध्वजारोहण में हजारों व्यक्ति उपस्थित थे। ध्वजारोहण के प्रारम्भ हुए सत्रों में जिन महानुभावों के व्याख्यान एवं भजन हुए उनमें स्वामी चित्तेवरानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, डा. रघुवीर वेदालंकार, डा. सोमदेव शास्त्री, श्री रामपाल शास्त्री, पं. नरेशदत्त आर्य, डॉ. आचार्य यज्ञवीर राणा, आचार्य डा. धनजंय, डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री, डॉ. अजीत आर्य, आचार्य नरदेव यजुर्वेदी हालैण्ड, डॉ. शारदा, आचार्या कन्या गुरुकुल उड़ीसा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। पं. नरेशदत्त आर्य जी ने ध्वजगीत गाया।

द्वितीय सत्र अपरान्ह 3.30 बजे प्रारम्भ हुआ और इस सत्र में सर्वश्री डा. अजीत आर्य जी और प्रसिद्ध विदुषी बहिन कल्पना आर्या जी भी सम्मिलित थी। आयोजन में भजनोपदेशकों के भजन भी हुए। रात्रि को संगीत संन्ध्या का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में अनेक भजनोपदेशकों ने भजन व गीत प्रस्तुत किये। इन भजनोपदेशकों में श्री दधीची जी, श्री मुकेश कुमार शास्त्री, श्री दिनेश पथिक जी, श्री कुलदीप आर्य जी, श्री नरेशदत्त आर्य जी तथा श्री राजवीर जी सम्मिलित थे। इसी प्रकार उत्सव के दूसरे दिन भी प्रातः यज्ञ के उपरान्त उपदेश, भजन एवं अन्य कार्यक्रम निरन्तर चलते रहे।

उत्सव के अन्तिम दिन प्रातः यज्ञ के उपरान्त समापन समारोह का विधिवत कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम गुरुकुल के स्नातकों का समावर्तन संस्कार करते हुए स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, स्वामी आर्यवेश जी तथा श्री अनिल अरोड़ा जी ने अंग वस्त्र, प्रशस्ति पत्र एवं धनराशि देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर स्नातकों ने भी स्वामी प्रणवानन्द सहित अपने समस्त गुरुजनों को गुरु दक्षिणा स्वरूप शॉल एवं अन्य वस्त्रों से सम्मानित किया। तत्पश्चात् व्याख्यानों का कार्यक्रम विधिवत रूप से प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम श्री नरेश दत्त आर्य ने एक भजन प्रस्तुत किया और उसके बाद आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री सहारनपुर, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक गुरुकुल होशंगाबाद, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. सोमदेव शास्त्री, डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, आचार्या अन्नपूर्णा, स्थानीय विधायक श्री सहदेव सिंह पुण्डीर जी एवं स्वामी आर्यवेश जी आदि विद्वानों के व्याख्यान हुए। मंच का कुशल संचालन गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक एवं संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार में प्राध्यापक पद पर सेवारत डॉ. रविन्द्र कुमार जी ने किया। उनका मार्गदर्शन गुरुकुल पौंधा के प्राचार्य आचार्य धनंजय जी करते रहे।

अपने उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही भारत को विश्व गुरु का पद प्राप्त हो सकता है। उन्होंने वर्ष 2024 से 2027 तक आर्य समाज की ओर से होने वाले कार्यक्रमों की संक्षिप्त रूपरेखा भी प्रस्तुत की। उन्होंने एम.डी.एच. के महाशय राजीव गुलाटी से प्रार्थना की कि वे गुरुकुलों को पोषित करने के लिए और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाने के लिए स्व. महाशय धर्मपाल जी की स्मृति में देश के सभी गुरुकुलों के संगठन श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी को साथ लेकर एक ट्रस्ट स्थापित करें जिसमें 200 करोड़ रुपये जमा कराये जायें और उसके ब्याज से देश के सभी गुरुकुलों को सहयोग प्रदान किया जाये। यह कार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती की दूसरी जन्मशती के उपलक्ष्य में 2024 तक करके महर्षि को अपनी सच्ची श्रद्धांजलि देने का कार्य करें।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि आप सभी अपने बच्चों को गुरुकुलों में भेजें। गुरुकुलीय जीवनशैली एवं दिनचर्या से बालक का सर्वांगीण विकास होता है। उन्होंने बताया कि वर्तमान में कई प्रदेशों में उनकी देख–रेख में गुरुकुलों का संचालन हो रहा है। आचार्य सोमदेव शास्त्री ने संस्कारों के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा ने कन्याओं की शिक्षा पर बल देते हुए कहा कि कन्या गुरुकुलों में अपनी बेटियों को पढ़ने के लिए भेजकर आप पुण्य कमा सकते हैं। क्योंकि कन्या गुरुकुल में पढ़ने वाली बेटियां शिक्षित एवं संस्कारित होकर दूसरों को ज्ञान से प्रकाशित करती हैं। आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में आर्ष शिक्षा के महत्त्व पर विशेष प्रकाश डाला और उन्होंने कहा कि आर्ष शिक्षा सृष्टि के प्रारम्भ से ही प्रचलित रही है। यह शिक्षा ईश्वर प्रदत्त वेद ज्ञान से ओत–प्रोत है।

इस अवसर पर महाशय राजीव गुलाटी के प्रतिनिधि के रूप में उत्सव में पधारे श्री अनिल अरोड़ा ने महाशय जी की ओर से घोषणा की कि गुरुकुलों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए महाशय जी का सहयोग निरन्तर मिलता रहेगा। उन्होंने कहा कि महाशय जी की इच्छा है कि देश में महर्षि दयानन्द जी द्वारा निर्दिष्ट गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को अधिक से अधिक प्रभावी बनाया जाये।

इस अवसर पर स्व. श्री राजवीर आर्य की ओर से प्रतिवर्ष किये जाने वाले एक विद्वान् के सम्मान के रूप में युवा विद्वान् आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक का अभिनन्दन किया गया और उन्हें परिवार की ओर से विशेष राशि एवं सम्मान पत्र भेंट किया गया। कार्यक्रम के उपरान्त गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का शानदान व्यायाम प्रदर्शन हुआ जिसे हजारों उपस्थित आर्यजनों ने देखकर मुक्त कंठ से प्रशंसा की और ब्रह्मचारियों के लिए अपनी ओर से हजारों रुपये की राशि भी भेंट की। गुरुकुल पौंधा का त्रिदिवसीय कार्यक्रम आर्यों के मेले के रूप में आयोजित हुआ। दूर–दूर से हजारों की संख्या में लोग तीन दिन तक गुरुकुल में विद्वानों के व्याख्यानों से आनन्दित होते रहे। हिमालय की हरी–भरी घाटियों के बीच और नदी के किनारे स्थित यह गुरुकुल वैसे भी अत्यन्त रमणीक एवं सुरम्य वातावरण से ओत–प्रोत है। अन्त में गुरुकुल के आचार्य डॉ. धंनजय जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस त्रिदिवसीय समारोह की व्यवस्था में गुरुकुल के अधिष्ठाता आचार्य चन्द्रभूषण, मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री, गुरुकुल के मीडिया प्रभारी एवं पत्रिका के सह–सम्पादक ब्र. शिवदेव आर्य, आचार्य यज्ञवीर शास्त्री, गुरुकुल के अध्यापक श्री शिव कुमार, डॉ. रविन्द्र कुमार शास्त्री आदि का विशेष योगदान रहा। इसी प्रकार गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं अध्यापकों ने भी दिन–रात एक करके कार्यक्रम को सफल बनाया।

ईश्वर की रचना और उपासना

—प्रेम प्रकाश वानप्रस्थ

१. रचयिता की रचना एक अद्‌भुत कमाल है। संसार में हम सब एक नियम देखते हैं कि कोई वस्तु बिना बनाये नहीं बनती। ये सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश समुद्रों की गहराई और पर्वतों की ऊँचाई, ये सब देख कर यह मानना ही पड़ता है कि इन सब का कोई बनाने वाला है, जिसे ईश्वर कहते हैं, क्योंकि वह ऐश्वर्यों का दाता व निर्माता है, इसी गुण के आधार पर उसका ''ईश्वर'' नाम हुआ। अन्यथा उसका मुख्य नाम ''ओ३म्'' है।

कुछ लोग ईश्वर को नहीं मानते

२. सृष्टि में जो वस्तु बनती है, वह अवश्य बिगड़ती है। जो जन्मता है वह अवश्य मरता है। जमीन घूमती है, जिससे दिन रात्रि बनते हैं। वृक्षों पर फल फूल लगने लगते हैं, परन्तु जो फल जहाँ लगना चाहिये वहीं लगा है, बेर, लीची, अंगूर, अमरूद आदि ऊपर लगे हैं, और बड़े–बड़े पेठे, तरबूज आदि नीचे लगे हैं, क्योंकि यदि ऐसा न होता तो थोड़ी सी तेज वायु चलने पर कोई तरबूज पेठा टूट कर नीचे गिर जाता तो मनुष्य का सिर फट जाता। इन नियमों को जो नियन्त्रण कर रहा है, उसे ईश्वर कहते हैं।

ईश्वर कण-कण में व्यापक है

३. भगवान् कोई ऐसा सेठ नहीं, जो सृष्टि बनाकर कहीं चला गया हो। वह निराकार होने से कण–कण में व्यापक है। इसीलिए सारी सृष्टि उसके नियम का पालन कर रही है। यदि वह सब वस्तुओं में व्यापता नहीं होता तो सारे नियम बिगड़ जाते। सृष्टि के आदि में बने मनुष्य, पशु, पक्षी, जलचर और फल, फूल आदि आज भी वैसे ही हैं, जैसे सृष्टि के आदि में बने थे। उसमें कोई अन्तर नहीं आया और न ही किसी व्यवस्था में खराबी आई। यही उसकी व्यापकता का सब से बड़ा प्रमाण है परन्तु मनुष्य की बनाई सब चीजें इसीलिए खराब होती हैं क्योंकि वह वस्तुओं में व्यापक नहीं।

रचना में अन्तर

४. इस विशाल सृष्टि की रचना करके भगवान् ने कमाल किया है। सृष्टि के सारे मनुष्य मिलकर भी एक चाँद नहीं बना सकतें, परन्तु मानव ने भी अपनी रचना में कमाल किया है, जैसे वर्तमान में सुविधाएँ टेलीफोन, टी.वी. , वायुयान, राकेट आदि गर्मी में बर्फ, सर्दी में हीटर बड़े–बड़े समुद्री जहाज और आजकल कम्प्यूटर ने तो ऐसा कमाल किया, लोगों को आश्चर्य में डाल दिया है, परन्तु भगवान् की रचना और मनुष्य की रचना में एक मौलिक अन्तर है। भगवान् ने जिन वस्तुओं की मनुष्य को आवश्यकता है, उन वस्तुओं में ही उन वस्तुओं को पैदा करने की शक्ति प्रदान कर दी, जैसे गेहूँ का दाना, सैकड़ों गेहूँ के दाने पैदा कर सकता है, एक आम हजारों आम पैदा कर सकता है, मनुष्य मनुष्य पैदा कर सकता है, गाय गाय पैदा कर सकती है, आदि–आदि। परन्तु मनुष्य का बनाया रेल का इंजन अपने जैसा रेल का इंजन पैदा नहीं कर सकता, घड़ी घड़ी पैदा नहीं कर सकती और सूई अपने जैसी सूई भी नहीं बना सकती।

रचना में विशेषता

५. भगवान् के नियमों को जानकर मनुष्य ने रचना तो की है। जैसे कुर्सी, मेज, कार, रेल का इंजन, वायुयान आदि–आदि बनाये, परन्तु कुर्सी की लकड़ी को नहीं बनाया, लोहे को नहीं बनाया, रुई को नहीं बनाया, कोयले को नहीं बनाया, अग्नि को नहीं बनाया, जल को नहीं बनाया, पैट्रोल को नहीं बनाया परन्तु रेल के इंजन को चलाया। इसी लिए महर्षि दयानन्द जी महाराज आर्यसमाज के प्रथम नियम में कहते हैं कि ''सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।'' फिर मनुष्य सब वस्तुएँ दिन में या लाईट में ही बनाता है, फिर भी बहुत भूल हो जाती हैं। परन्तु भगवान् सब काम अन्धेरे ही में करते हैं, फिर भी कहीं भूल नहीं हो सकती। यही रचना में विशेषता है।

क्या ईश्वर साकार है ?

६. नहीं, क्योंकि जो वस्तु बनी या जन्मी है, वह अवश्य बिगड़ेगी। साकार पदार्थ सीमित होता है, परन्तु भगवान् तो सर्वव्यापक है, सर्वव्यापक निराकार ही हो सकता है। भगवान् विशाल है, अतः उसकी विशालता उसकी रचना में भी झलकती है। जैसे धरती ने किसी को अन्न देने से इन्कार नहीं किया, उसके जल ने किसी को जीवन देने से इन्कार नहीं किया, उसकी वायु ने किसी को प्राण देने से इन्कार नहीं किया, उसके सूर्य ने किसी को प्रकाश देने से इन्कार नहीं किया। उस व्यापक एवं विशाल को साकार कहकर, हम उसे छोटा करने का अपराध करते हैं। वह महान् है, उसकी रचना में महानता झलकती है और छलकती है। उस महान् का सब कुछ महान् है क्योंकि वह निराकार है।

ईश्वर, जीव, प्रकृति

७. ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि होने से कई सृष्टि को भी ईश्वर मान लेते हैं। लोहार ट्रंक पेटी को बनाता है, लोहे को नहीं। हलवाई मिठाई को बनाता है, अन्न घी खाण्ड को नहीं। अतः समझ लेना चाहिए कि सृष्टि में तीन पदार्थ अनादि हैं, जिन्हें ईश्वर जीव और प्रकृति कहते हैं। जिसने वस्तुओं को बनाया वह ईश्वर है, जिससे बनाया वह प्रकृति है, जिसके लिए बनाया वह जीव है। मानो हलवाई ''ईश्वर है, अन्न, घृत खाण्ड ''प्रकृति'' है और खाने वाले ''जीव'' हैं। हमारा शरीर प्रकृति है, जिसके लिए बना 'जीव'' है और जिसने बनाया ''ईश्वर'' है। जैसे भगवान् ने सूर्य को बनाया, जिससे बनाया वह प्रकृति (परमाणु) है जिसके, लिए बनाया, वह ''जीव'' है। ''बनी वस्तु जहां बनाने वाले का पता देती है, वहां यह भी बताती है कि इसका कोई उपयोग करने वाला भी है। अतः तीन पदार्थों को अनादि मानना सार्वजनिक सार्वकालिक सत्य है।''

मनुष्य सृष्टिकर्त्ता नहीं हो सकता

८. इस युग में ऐसे लोगों की कमी नहीं, जो ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता नहीं मानते, वे मनुष्यों को ही भगवान् माने बैठे हैं। वे कहते हैं सृष्टि अपने आप बन गई, परन्तु जो बनती है वह अवश्य बिगड़ती है। जड़ वस्तु एक ही काम कर सकती है, या तो बनती ही रहे या बिगड़ती ही रहे। विपरीत गुण होने का मतलब किसी का हस्तक्षेप है, उसे ही ईश्वर कहते है, जो निर्माण गति और संहार करता है। एक युवक ने कहा कि जब भगवान् निराकार हैं तो उसके हाथ पांव हो ही नहीं सकते परन्तु संसार में सब कार्य हाथ पांव आदि से ही होते हैं, अतः ईश्वर है ही नहीं। मैंने कहा बेटा यदि पांव और हाथ के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता तो तुम जब भोजन करते हो तो उसका रस शरीर में बनता है, खून बनता है, हड्‌डी आदि बनते हैं, बताओ किस हाथ पांव से काम लिया ? कौन–सा बिजली का बटन दबाया ? दिन रात श्वास चलता है, बताओ तुम इसमें क्या करते हो? मनुष्य यदि कुछ कर सकता होता तो किसी को मरने ही न देता। बेटा हाथ पांव से शरीर के बाहर के कार्य होते हैं, जैसे बाल्टी को उठाना, कपड़े धोना, चलना आदि–आदि परन्तु शरीर के अन्दर के कार्य ''आत्मा'' सब बिना हाथ पांव के अर्थात् बिना किसी सहायता के कर सकता है। वैसे ही ईश्वर सर्वव्यापक होने से, कोई भी पदार्थ उससे बाहर न होने के कारण, सारी सृष्टि का कार्य बिना हाथ पांव के कर लेता है।

ध्यान कैसे करें ?

९. प्रायः लोग प्रश्न किया करते है कि जब कोई वस्तु सामने ही नहीं है तो ध्यान कैसे करें? कई लोगों ने ध्यान करने के लिए मूर्तियाँ बनाईं, परन्तु मूर्तियें में ध्यान हो ही नहीं सकता, क्योंकि जो पदार्थ सामने होता है, उसका ध्यान नहीं दर्शन होता है। ध्यान उसका ही होता है, जो निराकार है। बच्चे जब पाठ भूल जाते हैं तो अध्यापक कहा करते हैं, बेटा ! ध्यान करो, क्योंकि शब्द की शक्ल नहीं होती। मूर्तिपूजा करने वालों को भी जब अन्दर से आनन्द आने लगता है, आंखें बन्द कर लेते हैं, क्योंकि ईश्वर का विषय आंखों का नहीं, ''आत्मा'' का है। अतः ईश्वर का विषय भौतिक नहीं, आध्यात्मिक है, अतः ईश्वर की अनुभूति आत्मा से ही हो सकती है।

ध्यान कहां करें

१०. कई लोग ध्यान के स्थान पर पूजा भी करते हैं। परन्तु ध्यान रखें, पूजा माता पिता, गुरु, अतिथि, गाय आदि की हुआ करती है, क्योंकि पूजा का अर्थ पूजा होती है बाहर से और उपासना होती है अन्दर से। अतः प्रभु का मन्दिर (आत्मा का निवास स्थान) हृदय देश ही है। अतः भगवान् कृष्ण गीता १८–७१ में कहते हैं, ''ईश्वरः सर्वभूतानाम् हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति।'' इसलिए ईश्वर का मिलन वहीं होगा, जहां आत्मा भी हो। ध्यान का स्थान हृद्देश अर्थात् हृदय से ब्रह्मरन्ध्र तक कहा गया है। अतः ध्यान भी यहीं करें।

ध्यान क्यों करें ?

११. क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अच्छा बनना चाहता है ''यश'' चाहता है। जैसी संगत वैसी रंगत। यह एक मौलिक सच्चाई है कि हम यदि फल वाले की दुकान पर ही जायें तो सुगन्ध से भर जायेंगे। ठीक इसी प्रकार भक्ति से जीवन में सुगन्ध आती है। भगवान् से प्यार करने वाले सब के प्यारे होते हैं। भगवान् की संगत से, उसकी प्रेरणा, से, उसकी कृपा से मनुष्य ''पवित्र'' होकर गुणों से भर जाता है। ''पवित्रता'' जीवन का मूल और भक्ति–जीवन का फूल है। अतः ध्यान करें, और फूल बनें।

१२. भक्ति पवित्र होकर नित्य करनी चाहिये, क्योंकि भगवान् नित्य और पवित्र है, अतः नित्य का नित्य से ही मिलन हो सकता है। समझने की बात यह है कि आत्मा और परमात्मा में विशेष अन्तर है। आत्मा अल्पज्ञ और परमात्मा सर्वज्ञ है, आत्मा पुरुष और परमात्मा पुरुषोत्तम हैं, आत्मा ससीम और परमात्मा असीम हैं। यह गणना नहीं हो सकती। अन्त में यही कहना है कि आत्मा है ''आनन्द'' का भिखारी, और परमात्मा हैं आनन्द के भण्डारी।

—आर्यकुटि, धूरी १४८०२४,
(पंजाब-भारत)

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन	– पृष्ठ 232	–	मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन	– पृष्ठ 248	–	मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शन	– पृष्ठ 240	–	मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन	– पृष्ठ 156	–	मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि	– पृष्ठ 278	–	मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ
25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

सार्थक जीवन में योग

– डॉ. अन्नपूर्णा

संसार में प्रत्येक व्यक्ति दुःख से छूटना चाहता है एवं साथ ही परमसुख अथवा परमानन्द को प्राप्त करना चाहता है, वह भी स्थाई रूप में जिससे मानव जीवन सार्थक हो जाये। इस लक्ष्य की पूर्ति कैसे सम्भव है? विचार करने पर पता चलता है कि संसार की वस्तुओं को भोगने से स्थायी आनन्द नहीं मिल सकता, क्योंकि संसार के भोगों में केवल क्षणिक सुख विद्यमान है और वह सुख भी दुःखमिश्रित है। अतः स्थायी आनन्द की प्राप्ति के लिए एवं मानव जन्म को इसी जन्म में सार्थक बनाने के लिए भोग नहीं, योग की आवश्यकता है। समस्त दुःखों से छूटने का उपाय तथा परमानन्द की प्राप्ति का उपाय वेदों में बताया गया है। जैसे –

जतमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति, नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय। यजु. 31/18

उस प्रभु को जानकर प्राप्त करके ही दुःखों से हम छूट सकते हैं। परमानन्द प्राप्ति के लिए और कोई दूसरा मार्ग नहीं है। अतः आज के समाज में सच्चे योगियों को छोड़कर प्रायः सभी लोग किसी न किसी रूप में दुःखी हैं। इस कारण, उस ईश्वर को हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं, जो समस्त प्रकार के दुःखों से (आध्यात्मिक दुःख, आधिभौतिक दुःख, आधिदैविक दुःख) छुड़ा सकता है। इसका एकमात्र उपाय योग है। अतः योग को जानना है।

योग क्या है?

योग = योग शब्द युज् समाधौ धातु से धम् प्रत्यय करने पर सिद्ध होता है। योगदर्शन में योग अन्य धातु से नहीं लिया गया। व्यास भाष्य में लिखा है – 'योगः समाधिः' अर्थात् समाधि को ही योग कहते हैं।

ऋषि पतंजलि ने योग का वास्तविक स्वरूप योगदर्शन में बताया है – 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' – योग 1/2 अर्थात् चित्त के अन्दर जो वृत्तियाँ उभरती हैं, उन सब वृत्तियों को रोकना या निरोध करने का नाम योग है। आत्मोन्नति के लिए मानव को आध्यात्मिक तथा संयमयुक्त जीवन को अपनाना चाहिए, जिससे व्यक्ति के मन, वाणी तथा कर्म तीनों पवित्र होते हैं। व्यक्ति ईश्वर से प्रार्थना करता है, हे प्रभो! मेरे अन्दर जो भी त्रुटि है अथवा दोष है, उन सभी दोष को मुझसे दूर करो, यही मेरी प्रार्थना है। जैसे कि मन्त्र में कहा गया है –

''यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयमस्य मनसो वाऽतितृण्णम् बृहस्पतिर्मे तद् दधातु' (यजुर्वेद 37/2)

जब मनुष्य अपने दोष को देखता है अथवा आत्मनिरीक्षण करता है, तब वह ऊपर उठता है, गुणों को धारण करता है। संसार में सबको समान देखता है, राग–द्वेष से परे हो जाता है। अपना कल्याण करता है तथा दूसरों का भी कल्याण करता है।

पहले बताया गया था कि योग समाधि को ही कहते हैं। उसमें ईश्वर साक्षात्कार होता है, परमानन्द की प्राप्ति होती है। तब वह भी जानना होगा कि समाधि तक कैसे पहुँचें।

इसका उत्तर है, जिसका व्यवहार काल शुद्ध होगा, उसका उपासना काल भी शुद्ध होगा। मनुष्य का ज्ञान शुद्ध हो तो कर्म भी शुद्ध होते है।, फिर उपासना भी शुद्ध होती है। अतः ज्ञानी व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए व्यावहारिक जीवन को भी पवित्र बनाता है।

योग के आठ अंग हैं, जिसको अष्टांगयोग कहते हैं। महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन ग्रन्थ में भी उसका वर्णन किया है। इन आठ अंगों का पालन करके साधक समाधि तक पहुँचता है। ये अंग हैं :–

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यान समाधयोऽष्टावङ्गानि (योगदर्शन 2/27)

अर्थात् यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये उपासना योग के आठ अंग हैं। तद्यपि ये योग के आठ अंग ही विवेकज्ञान के लिए, प्रकृति और पुरुष की पहचान के लिए, आत्मा और परमात्मा के साक्षात्कार के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं अर्थात् अपने जीवन के परम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इनमें से किसी की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

1. यम :– यह पांच प्रकार के हैं। यथा –

अहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः। (योगदर्शन 2/30)

अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पांच यम कहलाते हैं।

अहिंसा का अर्थ किसी भी प्राणी को किसी भी समय मन, वाणी और कर्म से दुःख न पहुँचाना। सत्य का अर्थ है जो मनुष्य के मन में है, वही वाणी में हो, वही कर्म में हो अर्थात् जैसे देखा हो, जैसे सुना हो, जैसे अनुभव किया हो, वैसा ही वाणी में बोले, मन में धारण करे और आचरण में लाये, उससे व्यक्ति सफल होता है। अतः महर्षि पतंजलि ने कहा है –

'सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्' (योगदर्शन 2/37)

अस्तेय का अर्थ न स्तेय। चोरी को स्तेय कहते हैं। जो मनुष्य मन, वाणी और शरीर से किसी भी व्यक्ति के किसी भी पदार्थ के प्रति चोरी की भावना भी न करे तथा कर्म से भी न करे, उसे अस्तेय कहते हैं। अस्तेय के पालन से ईश्वर की ओर से सभी कुछ उत्तम द्रव्य प्राप्त होते हैं। महर्षि पतंजलि के योगदर्शन के अनुसार –

'अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्' (योग 2/37)

ब्रह्मचर्य का अर्थ है वीर्य की रक्षा करते हुए ब्रह्म में, ईश्वर में सदा विचरण करना अर्थात् वेदानुकूल जीवन व्यतीत करना तथा ब्रह्म में संलग्न रहना।

परिग्रह कहते हैं – चहुं ओर से संग्रह करने को और अपरिग्रह कहते हैं चहुँ ओर से संग्रह न करने को। जितनी आवश्यकता है, उतने ही धन तथा द्रव्य को एकत्रित करना।

साधक विषयों के संग्रह करने अर्थात् धन सम्पत्ति को इकट्ठा करने, फिर उसकी रक्षा करने अर्थात् उसको सम्भालने और फिर उसके नष्ट हो जाने, समाप्त हो जाने में तथा उसके संग में, उपभोग में, सर्वत्र हिंसा रूप द्वेष को देखकर उन विषयों को स्वीकार नहीं करता, यही अपरिग्रह है।

महर्षि पतंजलिकृत योगदर्शनानुसार – 'अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्तासम्बोध' (योगदर्शन 2/39) अर्थात् अपरिग्रह का दृढ़तापूर्वक पालन करने पर जन्म के सम्बन्ध में जानने की इच्छा तीव्र हो जाती है।

2. नियम – शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान ये पांच नियम हैं। महर्षि पतंजलि के योगदर्शनानुसार –

'शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः' (योगदर्शन 2/32)

3. आसन :– ऋषि पतंजलि के अनुसार 'स्थिरसुखमासनम्' (योगदर्शन 2/46) अर्थात् ईश्वर के ध्यान के लिए जिस स्थिति में सुखपूर्वक, स्थिर होकर बैठा जाए, उस स्थिति का नाम आसन है। उदाहरण : पद्मासन सिद्धासन, स्वस्तिकासन इत्यादि।

4. प्राणायाम :– महर्षि पतंजलि के अनुसार 'तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गति विच्छेदः प्राणायामः (योगदर्शन 2/49) अर्थात् किसी आसन पर स्थिरतापूर्वक बैठने के पश्चात् मन की चंचलता को रोकने के लिए श्वास, प्रश्वास की गति को विधिपूर्वक, विचार से यथाशक्ति रोकने हेतु, जो क्रिया की जाती है, उसका नाम प्राणायाम है।

5. प्रत्याहार :– महर्षि पतंजलि के अनुसार – 'स्वविषयासंप्रयोगे चित्तस्वरूपाऽनुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः (योगदर्शन 2/54) अर्थात् मन के रूक जाने पर नेत्रादि इन्द्रियों का अपने–अपने विषयों के साथ सम्बन्ध नहीं रहता, अर्थात् इन्द्रियाँ शान्त होकर अपना कार्य बन्द कर देती हैं। इस स्थिति का नाम प्रत्याहार है।

प्रत्याहार की सिद्धि होने से योगाभ्यासी का इन्द्रियों पर सर्वोत्कृष्ट वशीकरण हो जाता है। वह अपने मन को जहाँ और जिस विषय में लगाना चाहता है, लगा लेता है तथा जिस विषय में मन को हटाना चाहता है, हटा लेता है।

6. धारणा :– किसी स्थान विशेष पर चित्त को स्थिर रखना धारणा कहलाती है महर्षि पतंजलि के अनुसार – 'देशबन्धश्चित्तस्य धारणा' (योगदर्शन 3/1) अर्थात् ईश्वर का ध्यान करने के लिए आंखें बन्द करके, मन को मस्तक, भ्रूमध्य, नासिका, कण्ठ, हृदय नाभि आदि किसी एक स्थान पर स्थिर करने या रोकने का नाम धारणा है।

7. ध्यान :– धारणा करने वाले स्थान पर एक वस्तु के ज्ञान का प्रवाह बना रहना ध्यान कहलाता है। महर्षि पतंजलि के अनुसार – 'तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्' (योगदर्शन 3/2) अर्थात् किसी एक स्थान पर मन को स्थित कर देने के पश्चात् वेदमंत्र या अन्य शब्दों के माध्यम से ईश्वर को प्राप्त करने के लिए, ईश्वर को अनुभव करने के लिए, उसके गुण–कर्म–स्वभाव का निरन्तर चिन्तन करना किन्तु बीच में किसी अन्य वस्तु या विषय का स्मरण न करना ध्यान कहलाता है।

सांख्य के अन्दर कपिल ऋषि कहते हैं, इसके लिए मन को विषय से शून्य करना होगा। सांख्यादर्शनानुसार 'ध्यानं निर्विषयं मनः' अर्थात् सभी प्रकार के अर्थात् रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द इन विषयों से मन को हटाकर ही ध्यान में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

8. समाधि :– वह ध्यान ही समाधि कहलाता है, जो केवल वस्तु के स्वरूप (ईश्वर के स्वरूप) को प्रकाशित करने वाला हो और अपने स्वरूप से रहित हुआ हो। महर्षि पतंजलि के अनुसार – 'तदेवार्थ मात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः' (योगदर्शन 3/3) अर्थात् शब्दप्रमाण तथा अनुमान प्रमाण के माध्यम से ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का निरन्तर चिन्तन करते रहने पर जब ईश्वर का प्रत्यक्ष होता है, अर्थात् ईश्वर के आनद में साधक निमग्न हो जाता है, तब उस अवस्था को समाधि कहते हैं।

ध्यान और समाधि में भेद यह है कि ध्यान में ईश्वर की खोज चलती रहती है और जब ईश्वर की खोज पूर्ण होकर ईश्वर का प्रत्यक्ष हो जाता है तो वही समाधि कहलाती है।

जो व्यक्ति संसार के राग, द्वेष में फंसा रहता है एवं सकाम कर्म करता है, वह कभी ध्यान नहीं कर सकता। अतः पांच प्रकार के क्लेशों से शून्य होकर अन्तरात्मा को निर्मल करता हुआ साधक परमात्मा के पवित्र आनन्द को प्राप्त कर सफल होता है क्योंकि नित्यान्द का एकमात्र आधार ईश्वर है। अतः कहा गया है –

'रसोवैसः। रसं लब्ध्वा आनन्दी भवति।'

अर्थात् आनन्द (सबसे स्वादिष्ट रस) से वह परमात्मा परिपूर्ण है। जो व्यक्ति इसे प्राप्त करता है, वह आनन्दमय हो जाता है। अतः काम, क्रोध, लोभ, मोह, इन पर विजय प्राप्त करके उस आनन्द की ओर चलना है, अपना जीवन सार्थक कर लेना है, सम्पूर्ण संसार को असत् मार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर चलाना है, अनेक लोगों को जीवन का सत्य पथ दिखाना है, बहुत लोगों का कल्याण करते हुए ईश्वर को प्राप्त करके अपने जीवन को सार्थक बनाना है और परिशेष में समाधि को प्राप्त करना है।

– आचार्या द्रोणस्थली, आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

गुरुकुल धीरणवास में युवा संकल्प समारोह का आयोजन भव्यता के साथ सम्पन्न

स्वामी सर्वदानंद जी ने अपने जीवन के 50 वर्ष क्षेत्र में शिक्षा का दीप जलाने के लिए लगाए

–स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज के वरिष्ठ आर्य संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी सरस्वती की तीसरी पुण्य तिथि के अवसर पर दिनांक 3 जून, 2022 को गुरुकुल धीरणवास में युवा संकल्प समारोह का आयोजन स्वामी आर्यवेश की अध्यक्षता में किया गया। पांच दिन से चल रहे युवा चरित्र निर्माण एवं योग शिविर का समापन समारोह 3 जून, 2022 को हुआ। युवाओं ने व्यायाम प्रदर्शन करके सबको आश्चर्यचकित कर दिया। पी.टी., जूडो–कराटे, बॉक्सिंग, दण्ड–बैठक, स्तूप आदि बनाकर दिखाए।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि युवाओं को शिक्षा के साथ–साथ संस्कार देकर ही हम स्वामी सर्वदानंद जी को सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। क्योंकि उन्होंने इस क्षेत्र में शिक्षा की ज्योति लगातार 50 वर्षों तक जलाए रखी। उनका पूरा जीवन समाज को समर्पित रहा। स्वामी जी ने बताया कि वे पहले फौज में रहकर देश की सेवा की और उसके बाद गुरुकुल में रहकर उन्होंने राष्ट्र रक्षा व वैदिक शिक्षा का कार्य प्रारम्भ किया। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि गुरुकुल का उद्देश्य शिक्षा के साथ–साथ संस्कार देने का भी होना चाहिए। वर्तमान समय में युवाओं को संस्कारित करना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि संस्कारित युवक ही राष्ट्र की उन्नति कर सकते हैं। इसलिए गुरुकुलों की जिम्मेदारी बनती है कि वे बच्चों को शिक्षित–दीक्षित करने के साथ–साथ गुरुकुलों में समय–समय पर इस प्रकार के शिविरों का आयोजन करके बच्चों के चरित्र निर्माण का कार्य अवश्य करें। क्योंकि यह सब कार्य गुरुकुलों के माध्यम से ही सम्भव हो सकता है। स्वामी आर्यवेश जी ने युवाओ को नशे से दूर रहने व वैदिक संस्कृति को अपनी जीवन शैली का हिस्सा बनाने का संकल्प दिलवाया।

गुरुकुल के प्रधान व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि देश की आजादी के आंदोलन में सबसे महत्वपूर्ण योगदान आर्य समाज का रहा है। स्वामी दयानन्द व उनके अनुयायियों ने अपने जीवन की आहुति आजादी की बलिवेदी पर सबसे अधिक दी है। स्वामी श्रद्धानन्द, भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, भाई परमानंद, श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपतराय आदि नाम अग्रणी हैं।

स्वामी सर्वदानंद जी को श्रद्धांजलि देने वालों में गुरुकुल के पूर्व प्रधान चौधरी युद्धवीर सिंह, राजकुमार आर्य, रामस्वरूप सागड़ा, सूबे सिंह आर्य, जिला वेद प्रचार मंडल के प्रधान राम कुमार आर्य, हरियाणा राज्य गौशाला संघ हरियाणा के प्रधान शमसेर आर्य, सजग के प्रदेशाध्यक्ष, देवदत्त शास्त्री, वेद प्रकाश सोनी, बलजीत पुनिया, शमशेर पुनिया, महावीर तहसीलदार, बलबीर देशवाल, अनूप मुकलान, खजान सिंह पनिहार आदि मुख्य थे। पूरे कार्यक्रम का संयोजन गुरुकुल के मंत्री श्री दलबीर आर्य मुकलान ने किया। इस अवसर पर सर्वश्री मनीराम गोयल, सतप्रकाश, जयवीर सोनी, भूप सिंह, कृष्ण आदि उपस्थित रहे।

शिविर समापन के अवसर पर मुख्य प्रशिक्षकों को स्वामी आर्यवेश जी व आर्य युवक परिषद् के अधिकारियों व गुरुकुल के कार्यकर्ताओं ने सर्वश्री सहसरपाल आर्य, गुलाब सिंह, सोनू आर्य, अनिल आर्य, नितिन आर्य, मन्नू आर्य, स्वामी मुक्तिवेश, सोमपाल आर्य, हनुमान आर्य आदि को सम्मानित किया गया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।